

## पद २५५

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

राखो मोरी लाज ये महाराज ॥ध्रु.॥ पतितपावन प्रभु श्रीहरि दीन  
के देवर भक्तन काज ॥१॥ तुमहि तारो तुमहि मारो । तुम भक्तनके  
सिरताज ॥२॥ मानिक के प्रभु नाथ कृष्णजी शरन आये  
यदुराज ॥३॥